07.04.2020

B.A. I Hons. Philosophy. 1st Paper

न्यायशास्त्र के अनुसार प्रत्यक्ष प्रमाण

प्रत्यक्ष की मौलिकता और उसका महत्व→ प्रमाणों में प्रत्यक्ष का पहला स्थान है। यह अन्य सभी प्रमाणों का मूल आधार है। प्रत्यक्ष ज्ञान अन्य सभी प्रमाणों की सत्यता की कसौटी भी है। अनुमान आदि प्रमाणों की सत्यता में जब हमें संदेह होता है तो उसका अन्तिम निराकरण प्रत्यक्ष द्वारा ही संभव होता है। लोकोक्ति भी है "प्रत्यक्षे किं प्रमाणम्"?

प्रत्यक्ष की परिभाषा→

प्रत्यक्ष का अर्थ और उसकी प्राचीन परिभाषा→

अन्नमभट्ट रचित प्राचीन "तर्कसंग्रह" में प्रत्यक्ष की सरल परिभाषा दी गई है "इन्द्रियार्थ सन्निकर्षजन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षम्" अर्थात इन्द्रिय और वस्तु के सन्निकर्ष से उत्पन्न ज्ञान को प्रत्यक्ष कहते हैं।

उक्त परिभाषा का विश्लेषण करने पर चार महत्वपूर्ण पद सामने आते हैं→

इन्द्रिय

अर्थ (वस्तु)

सन्निकर्ष तथा

ज्ञान।

इन्द्रिय दो प्रकार की मानी गई है (01) कर्मेन्द्रिय (02) ज्ञानेन्द्रिय।

कर्मेन्द्रिय→ जिनके द्वारा शारीरिक क्रियाएँ सम्पादित होती हैं उन्हें कर्मेन्द्रिय कहते हैं।

ज्ञानेन्द्रिय→ जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है, उन्हे ज्ञानेन्द्रिय कहते हैं। ज्ञानेन्द्रियों की संख्या छः है→ पाँच ज्ञानेन्द्रिय तथा एक मन। मन आन्तरिक इन्द्रिय है। इन पाँचों ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा पाँच प्रकार का ज्ञान प्राप्त होता है→

(01) दर्शनेन्द्रिय — आँख — "रूप" — चाक्षुष प्रत्यक्ष
(02) श्रवणेन्द्रिय — कान — "शब्द" — श्रौत प्रत्यक्ष
(03) घ्राणेन्द्रिय — नाक — घ्राण या गन्ध — घ्राणज प्रत्यक्ष
(04) रसनेन्द्रिय — जिह्वा — रस या स्वाद — रासन प्रत्यक्ष
(05) त्वगिन्द्रिय — त्वचा — स्पर्श — स्पार्शन प्रत्यक्ष

यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए कि आँख, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा इन्द्रिय नहीं है। ये दर्शनेन्द्रिय, श्रवणेन्द्रिय इत्यादि के अधिष्ठान मात्र हैं। इन्द्रियों को सूक्ष्म शक्ति माना गया है जो इन अंगों में अवस्थित रहती है। इन्द्रियों का ज्ञान अनुमान के द्वारा होता है। प्रत्यक्ष द्वारा उनका ज्ञान संभव

नहीं है। आँख, कान, नाक इत्यादि भौतिक है, इनके निर्माण में इन्हीं तत्वों का विशेष हाथ है जिनका गुण ये ग्रहण करती है। यथा:-
आँख के निर्माण में अग्नि या तेज की प्रधानता रहती है।
कान के निर्माण में आकाश की प्रधानता रहती है।
नाक के निर्माण में पृथ्वी की प्रधानता रहती है।
त्वचा के निर्माण में वायु की प्रधानता रहती है तथा जिह्वा के निर्माण में जल की प्रधानता रहती है।
इनके पीछे संभवतः यह सिद्धान्त है कि सादृश्य ही सादृश्य का ज्ञान प्राप्त कर सकता है।
मन:- एक आंतरिक इन्द्रिय है जिसके द्वारा जीव के सुख-दुःख, इच्छा-द्वेष इत्यादि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।
ज्ञेय (ज्ञेय पदार्थ अथवा विषय)- ज्ञान प्राप्ति के लिए किसी ज्ञेय पदार्थ का रहना अनिवार्य है। इन्द्रियों के द्वारा आखिर किसी विषय का ही तो ज्ञान प्राप्त किया जायेगा। इन्द्रियाँ स्वयं को तो विषय नहीं बना सकती। न आँख स्वयं को देख सकती है, न कान स्वयं को सुन सकता है और न जिह्वा स्वयं का स्वाद ग्रहण कर सकती है। अतः प्रत्यक्ष के लिए ज्ञाता से भिन्न बाह्य विषय का वास्तविक सत्ता अनिवार्य है। इसी विचार को दर्शन में वस्तुवाद कहते हैं।
सन्निकर्ष:- इन्द्रिय तथा वस्तु के रहने पर ही ज्ञान उत्पन्न नहीं होता बल्कि इन्द्रिय और विषय के बीच सन्निकर्ष अर्थात सम्पर्क का होना आवश्यक है।
प्रत्यक्ष की नवीन परिभाषा:- नव्य न्याय के प्रणेता गंगेश उपाध्याय प्रत्यक्ष को "साक्षात् प्रतीति" कहते हैं। वे प्रत्यक्ष की प्राचीन परिभाषा को दोषपूर्ण बताते हुए आधुनिक परिभाषा देते हैं "बिना किसी माध्यम के प्राप्त ज्ञान को ही प्रत्यक्ष कहते हैं।"
प्रत्यक्ष का वर्गीकरण:- न्यायशास्त्र के अनुसार प्रत्यक्ष का वर्गीकरण कई प्रकार से किया गया है। पहले वर्गीकरण के अनुसार प्रत्यक्ष के दो भेद होते हैं (1) लौकिक प्रत्यक्ष (2) अलौकिक प्रत्यक्ष। यह वर्गीकरण इन्द्रियों के साथ वस्तु के सम्पर्क होने के ढंग को ध्यान में रखकर किया गया है।

लौकिक प्रत्यक्ष –: लौकिक प्रत्यक्ष में इन्द्रिय तथा वस्तु का सम्पर्क साधारण ढंग से होता है। यानि इसमें इन्द्रियाँ केवल अपने विषय का ज्ञान प्राप्त करती हैं।

अलौकिक प्रत्यक्ष –: अलौकिक प्रत्यक्ष में इन्द्रिय तथा वस्तु का सम्पर्क असाधारण ढंग से होता है। यानि इसमें इन्द्रियाँ स्वयं से इतर विषयों का ज्ञान भी प्राप्त करने लगती है।

लौकिक प्रत्यक्ष के दो भेद होते हैं –

बाह्य प्रत्यक्ष –: जब बाह्य इन्द्रियों से सम्पर्क होने पर विषय का ज्ञान प्राप्त होता है तो इसे बाह्य प्रत्यक्ष कहा जाता है। बाह्य इन्द्रियों की संख्या पाँच है – आँख, कान, नाक, त्वचा और जिह्वा। इनके क्रमशः पाँच विषय हैं – रूप, शब्द, गंध, स्पर्श और स्वाद। अतः इन पाँच विषयों इन्द्रियों और विषयों के सम्पर्क से उत्पन्न ज्ञान की संख्या भी पाँच हो जाती है जो इस प्रकार है – चाक्षुष, श्रौत, घ्राणज, स्पार्शन तथा रासन। उदाहरण स्वरूप आपके सामने एक आम रखा है। आप आँखों द्वारा उसके रंग-रूप का, आकार-प्रकार का ज्ञान प्राप्त करते हैं। यह "चाक्षुष" प्रत्यक्ष कहा जाता है। इसे हाथ में लेकर जब दबाते हैं तो इसके कठोरता तथा मुलायमता के आधार पर इसके कच्चे अथवा पके होने का ज्ञान प्राप्त करते हैं। यह "स्पार्शन प्रत्यक्ष" हुआ। इसे नाक से सुंघने पर मिठीमहक का ज्ञान होता है। यह "घ्राणज प्रत्यक्ष" हुआ। पुनः जब इसे काटकर जिह्वा पर रखते हैं तो इसके मिठे स्वाद का ज्ञान होता है। यह "रासन प्रत्यक्ष" हुआ। तथा खाने के क्रम में जब जिह्वा तथा तालु के संघर्ष से उत्पन्न शब्द सुनाई पड़ता है तो यह "श्रौत प्रत्यक्ष" का उदाहरण हुआ।

मानस प्रत्यक्ष –: मानसिक अनुभूतियों (सुख-दुख, इच्छा-द्वेष) के साथ मन का संयोग होने से जो ज्ञान उत्पन्न होता है उसे मानस प्रत्यक्ष कहा जाता है। — — — — — —

शेष अगले भाग में।

डॉ॰ सन्तोष कुमार सिंह
विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र,
अनजबित सिंह महाविद्यालय,
बिक्रमगंज (रोहतास)
दिनांक-07.04.2020